सरस्वती श्रुतिमहतां महीयताम्

" माँ सरस्वती विद्वानों की कीर्ति को बढ़ाती रहें "इस ध्येय वाक्य को लेकर कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्थापना 1857 में हुई। आज भी यह विश्वविद्यालय विद्वानों की कीर्ति बढ़ाने का कार्य कर रहा है। विशेष रूप से भारतीय ज्ञान परम्परा को आगे बढ़ाने में इस विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय ज्ञान परम्परा का दूसरा नाम गुरु-शिष्य परम्परा भी है। गुरु ही अपने ज्ञान को सुशिष्य को देकर परम्परा को आगे बढ़ाता है। फिर वह शिष्य अपने शिष्य (प्रशिष्य) को ज्ञान वितरित करता है। इस प्रकार गुरु-शिष्य-प्रशिष्यों से भारतीय ज्ञान परम्परा विकसित होती चली गई। आज भी संस्कृत क्षेत्र में इस जीवन्त परम्परा को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

हमारे सामने एक विशिष्ट उदाहरण भी है। संस्कृत विश्वविद्यालय के एक पूर्व कुलपति जो संन्यास ग्रहण करने के बाद आज भी विद्यादान और सनातन धर्म के प्रचार एवं प्रसार में निरन्तर संलग्न हैं। आज उन्हीं के शिष्य अपने गुरुजी के मार्ग पर चलकर एक उत्कृष्ट विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति के रूप में सनातन धर्म का संरक्षण और विद्या का प्रसार यथावत् कर रहें हैं। इस प्रकार की विशेष घटना केवल भारत में विशेषकर संस्कृत क्षेत्र में दुर्लभ रूप से देखने को मिलती है।

Vice-Chancellor, Prof. Śāntā Dutta, awarding the 'Swami Vivekananda Medal' to Śrī Vidyāśrīśa Tīrtha Swāmījī.

आज (15/07/2024) कलकत्ता विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित भव्य समारोह में तिरुपति स्थित राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (पूर्व में RSVP, वर्तमान में NSU) के पूर्व कुलपति प्रो. डि. प्रह्लाद आचार्य जी, जो वर्तमान में संन्यास दीक्षा लेकर श्री विद्याश्रीशतीर्थ जी बने हैं, उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा " स्वामी विवेकानन्द पदक " से सम्मानित किया गया।

इस संदर्भ में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेडी जी ने प्रेमचंद्र तर्कवागीश विशिष्ट व्याख्यानमाला - २०२४ के अंतर्गत 'यथार्थवाद का तर्क' (Logic of Realism) विषय पर अपना विशिष्ट व्याख्यान दिया। आज की विशेषता यही रही कि श्री विद्याश्रीशतीर्थ जी के पूर्वाश्रम के प्रिय शिष्य एवं तिरुपति के पूर्व सहायक आचार्य प्रो. श्रीनिवास वरखेडी जी आज एक उत्कृष्ट संस्कृत विश्वविद्यालय (CSU) के कुलपति बनकर अपने गुरु की भव्य उपस्थिति में विशिष्ट व्याख्यान देकर गुरु-परम्परा से प्राप्त ज्ञान के द्वारा सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

Prof. Śrīnivās Varakheḍi,
Vice-Chancellor of Central Sanskrit University, Delhi.

प्रो. शान्ता दत्ता, जो कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में विराजमान हैं, उन्होंने आज सहर्ष गुरु-शिष्य को एक ही मञ्च पर सम्मानित किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. देबाशीष दास, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. कमल किशोर मिश्र, दर्शन विभाग प्रमुख डॉ. प्रलयंकर भट्टाचार्य, प्रेमचंद्र तर्कवागीश प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ चट्टोपाध्याय, श्री शुभाशिष सोनयाल आदि लोगों ने इस भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए अथक परिश्रम करके अपने उत्तरदायित्व का सफलता पूर्वक निर्वहण किया।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के सभी सारस्वत प्रेमी एवं विद्वान् लोग तथा विभिन्न परिषदों के सदस्य, शोधार्थी एवं वरिष्ठ छात्रगण इस विशिष्ट कार्यक्रम का आनंद लेने में सक्षम हुए। सभी सारस्वत प्रेमी इस ऐतिहासिक ज्ञानयज्ञ को याद रखेंगे।

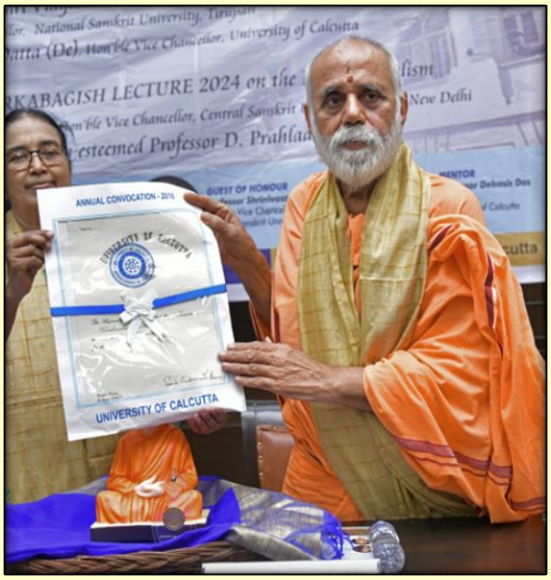

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतिमहतां महीयताम् ।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः ॥३५॥

(अर्थ - राजा नागरिकों के कल्याण के लिए प्रयास करें; माँ सरस्वती विद्वानों की कीर्ति को बढ़ाती रहें; भगवान शिव (नीललोहित) मुझे पुनर्जन्म से मुक्त करें, और ब्रह्मा अपनी शक्ति खो दें।)

May the king strive for the welfare of the citizens; may Saraswathi bless increasing glory of the scholars; may Siva (Nilalohita) rid me of rebirth, with Brahma losing his power.

विशेष सहयोग- डॉ. कमल किशोर मिश्र
विभागाध्यक्ष,संस्कृत विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय

सहयोग- डॉ. नीरज तिवारी
के.सं.वि.लखनऊ

वार्ता सार संग्रह – गणेश ति. पण्डित
विनय कुमार शुक्ल